RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
सितंबर
18
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

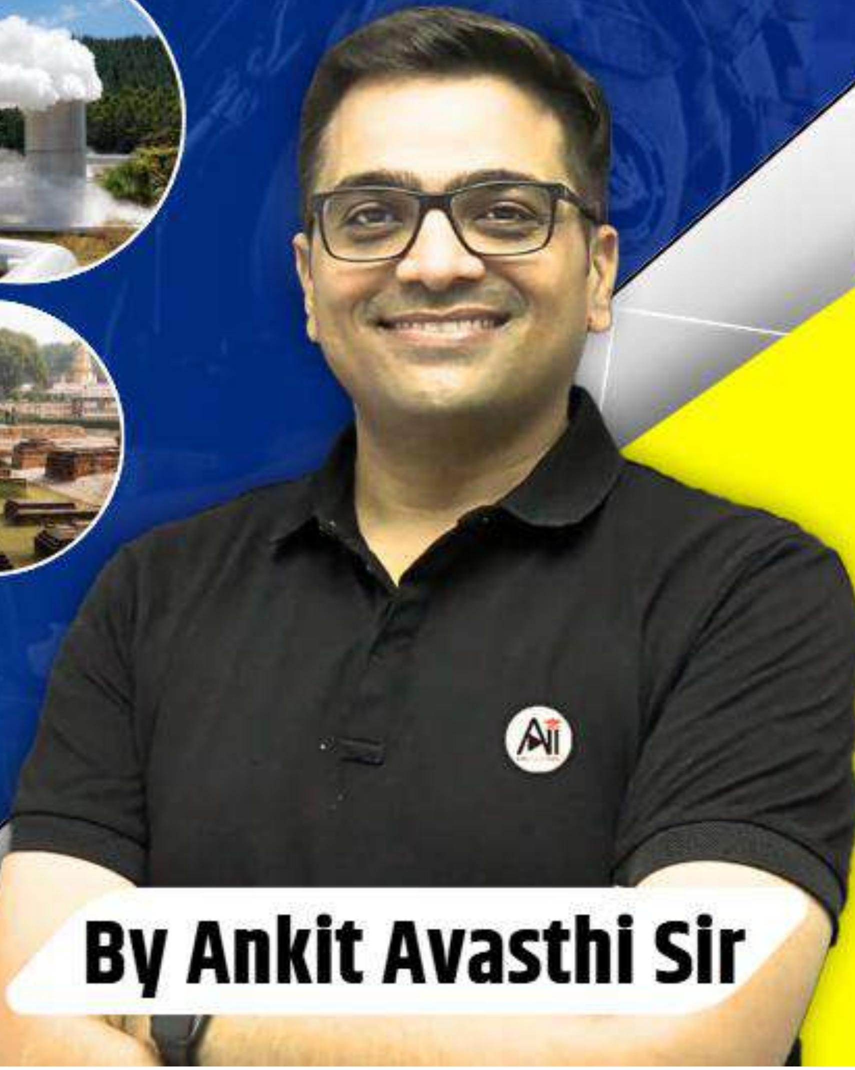

By Ankit Avasthi Sir

चीन ने अमेरिका और जापान से टाइफॉन मिसाइल प्रणाली वापस लेने का आग्रह किया / China urges US, Japan to withdraw Typhon missile system

संदर्भ:

चीन ने अमेरिका से जापान में तैनात किए गए मिड-रेंज **टाइफॉन मिसाइल सिस्टम** को तुरंत हटाने की मांग की। बीजिंग का कहना है कि यह कदम एशिया-प्रशांत क्षेत्र की सामरिक सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा साबित हो सकता है, साथ ही इससे हथियारों की दौड़ और सैन्य टकराव की आशंका और तेज हो जाएगी।

टायफून फायर सिस्टम के बारे मे-

टायफून, जिसे आधिकारिक रूप से स्ट्रैटेजिक मिड-रेंज फायर सिस्टम (SMRF) कहा जाता है, एक यूनाइटेड स्टेट्स आर्मी का ट्रांसपोर्टर-इरेक्टर-लॉन्चर है जो स्टैंडर्ड SM-6 तथा टोमहॉक क्रूज़ मिसाइलों का संचालन कर सकता है।

- हर इकाई में मार्क-41 वर्टिकल लॉन्चिंग सिस्टम के समकक्ष चार स्ट्राइक-लेंथ सेल होते हैं, जिन्हें 40-फुट (12 मीटर) आईएसओ कंटेनर के आयाम में फिट किया गया है। इस प्रणाली को आरम्भ में मिड-रेंज कैपेबिलिटीज सिस्टम (MCS) कहा जाता था, बाद में इसका नाम बदलकर SMRF रखा गया और व्यावसायिक नाम "टायफून" दिया गया।
- यह मोबाइल, सतह-से-सतह मारक क्षमता वाली प्रणाली है जिसे लॉकहीड मार्टिन (यूएस) ने विकसित किया। टायफून का डिजाइन मॉड्यूलर है और यह विभिन्न प्रकार की मिसाइलों को चलाने में सक्षम है- उदाहरण के लिए SM-6 जिसका अनुमानित प्रभावी दायरा लगभग 500 किमी है, तथा टोमहॉक क्रूज़ मिसाइल जिसका रेंज करीब 2,500 किमी तक बताया जाता है।
- SM-6 मुख्यत: वायु तथा सतह लक्ष्यों के खिलाफ उपयोगी है।
- जबकि टोमहॉक भू-हल्ला और कुछ एंटी-शिप भूमिकाओं में प्रभावी रहता है

टायफून की क्षमताएँ और संभावित असर:

- **मजबूत निवारक क्षमता:** टॉमहॉक मिसाइलों की 1,500 किलोमीटर से अधिक की रेंज के साथ टायफून, दक्षिण चीन सागर में संभावित समुद्री खतरों के खिलाफ फिलीपींस की रोकथाम क्षमता को मज़बूती देता है।
- **सटीक प्रहार की संभावना:** लगभग 240 किलोमीटर की रेंज वाली SM-6 मिसाइलें वायु-रक्षा की अतिरिक्त परत उपलब्ध कराती हैं, जिससे हवाई ख़तरों से सुरक्षा मिलती है।

बदलते रक्षा समीकरण: अमेरिकी मूल की इस प्रणाली की तैनाती से संकेत मिलता है कि फिलीपींस अपने रक्षा साझेदारी को विविध बना सकता है। इससे उसे न केवल उन्नत हथियार प्रणालियों तक पहुँच मिलेगी, बल्कि रक्षा वार्ताओं में अतिरिक्त leverage भी हासिल होगा।

टाइफून सिस्टम की मार चीन, ताइवान और कोरिया तक:

जापान के इवाकुनी में तैनात टाइफून मिसाइल सिस्टम टोमहॉक मिसाइलों के ज़रिए चीन के उत्तरी, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी तटों को निशाना बना सकता है। इसकी रेंज में आधा ताइवान, पूरा कोरियाई प्रायद्वीप और रूस के सुदूर पूर्वी हिस्से भी आते हैं।

जापान में पहली बार टाइफून मिसाइल सिस्टम की तैनाती:

जापान में पहली बार टाइफून मिसाइल सिस्टम की तैनाती की गई है।

- रेजोल्यूट ड्रैगन अभ्यास के बाद टाइफून जापान से वापस ले जाया जाएगा। हालांकि, अधिकारियों ने यह बताने से इनकार कर दिया कि यह यूनिट आगे कहाँ जाएगी या दोबारा जापान लौटेगी या नहीं।

फिलीपींस में पहली विदेशी तैनाती पर भी चीन का विरोध: अप्रैल 2024 में संयुक्त अमेरिका-फिलीपींस अभ्यास के दौरान पहली बार टाइफॉन मिसाइल प्रणाली फिलीपींस लाई गई थी। यही इसकी पहली विदेशी तैनाती मानी जाती है।

निष्कर्ष: जापान में टायफून मिसाइल सिस्टम की तैनाती ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की सुरक्षा बहस को और तेज़ कर दिया है। यह कदम जहां अमेरिका-जापान गठबंधन की सैन्य तत्परता और शक्ति का संकेत है, वहीं चीन के लिए यह सीधा चुनौतीपूर्ण संदेश बनकर उभरा है।

रक्षा मंत्री ने भारतीय सशस्त्र बलों को अपरंपरागत खतरों के लिए तैयार रहने का आह्वान किया / Defence Minister Exhorts Indian Armed Forces to be Ready For Unconventional Threats

संदर्भ:

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने देश की सशस्त्र सेनाओं से आह्वान किया है कि वे युद्ध की पारंपरिक अवधारणाओं से आगे बढ़कर असामान्य खतरों से निपटने के लिए तैयार रहें।

- उन्होंने चेतावनी दी कि जैविक, पारिस्थितिक और सूचना युद्ध के साथ-साथ वैचारिक ब्रेनवॉश जैसे अदृश्य खतरे ऐसे चुनौतियाँ हैं जिनसे निपटने के लिए निरंतर सतर्कता आवश्यक है। इसी कारण भविष्य के युद्ध जीतने के लिए पारंपरिक ढाँचों से आगे बढ़ना अनिवार्य है।

दीर्घकालिक युद्ध की तैयारी क्यों आवश्यक है?

1. **युद्ध की बदलती प्रकृति:** आधुनिक युद्ध अब केवल ज़मीन, हवा और समुद्र तक सीमित नहीं हैं। अब इनमें **हाइब्रिड वॉरफेयर** शामिल है – साइबर हमले, अंतरिक्ष-आधारित खतरे, सूचना युद्ध, ड्रोन और एआई-सक्षम हथियार। इन नई चुनौतियों से निपटने के लिए निरंतर आधुनिकीकरण ज़रूरी है।
2. **क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियाँ:** भारत के सामने **दोहरी चुनौती** है:
   - चीन की तेज़ी से बढ़ती सैन्य ताकत और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में आक्रामकता।
   - पाकिस्तान के प्रॉक्सी युद्ध, सीमा-पार आतंकवाद और अस्थिरता। इनसे निपटने के लिए भारत को अपने सैन्य बलों का आधुनिकीकरण करना आवश्यक है।
3. **प्रौद्योगिकी अंतर:** आधुनिक रक्षा उपकरणों के लिए अत्यधिक आयात पर निर्भरता भारत की कमजोरी है। आधुनिकीकरण से तकनीकी अंतर कम होगा, स्वदेशी क्षमता मज़बूत होगी और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की जा सकेगी।
4. **संचालनिक तैयारी:** भविष्य के युद्ध कम समय के, तीव्र और उच्च-स्तरीय हो सकते हैं। ऐसे हालात में भारत को आधुनिक, फुर्तीले और सुसज्जित बलों की आवश्यकता है। आधुनिकीकरण से विश्वसनीय निवारक क्षमता (Deterrence) और त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित होती है।

आधुनिकीकरण प्राप्त करने में चुनौतियाँ

1. **बहु-क्षेत्रीय संघर्ष के लिए पुन:** उन्मुखीकरण भविष्य के युद्ध मल्टी-डोमेन हाई-टेक ऑपरेशन्स पर आधारित होंगे। इसके लिए सैनिकों में मल्टी-स्किलिंग और मल्टी-कम्पिटेंसी विकसित करनी होगी। युद्ध की कला साथ-साथ विज्ञान को भी ऊँचे स्तर पर ले जाना आवश्यक है।
2. **मानव संसाधन और प्रोफेशनल मिलिट्री एजुकेशन:** अधिकारियों को रणनीतिक सोच (Strategic Thinking), नई तकनीक अपनाने (Technology Adaptation) और संयुक्त अभियानों (Joint Operations) की ट्रेनिंग देनी होगी। वर्तमान व्यवस्था अभी भी पारंपरिक, पद-आधारित पदोन्नति प्रणाली की ओर झुकी हुई है।
3. **प्रौद्योगिकीगत कमी:** भारतीय सेना अभी भी AI, Robotics, Drones, Cyber और Electronic Warfare में पीछे है। आधुनिक प्रणालियों को शामिल करने के साथ-साथ सिद्धांत, प्रशिक्षण और संरचना में सुधार भी ज़रूरी है, जो अभी धीमा है।
4. **नागरिक–सैन्य समन्वय की समस्या:** रक्षा मंत्रालय, सशस्त्र बलों और उद्योग के बीच समुचित तालमेल की कमी है। एक सशक्त प्रोक्योरमेंट अथॉरिटी के अभाव में रक्षा खरीद के निर्णयों में देरी होती है।
5. **भूराजनीतिक दबाव:** चीन और पाकिस्तान की दो-तरफ़ा चुनौती भारत के लिए त्वरित आधुनिकीकरण आवश्यक बनाती है, लेकिन प्रगति की रफ्तार अभी धीमी है। इसके अलावा, यदि प्रतिबंध या सप्लाई चेन में बाधा आती है, तो स्वदेशी क्षमताओं का अभाव गंभीर खतरा बन सकता है।

कोल्हान की मानकी-मुंडा व्यवस्था / Kolhan's Manki-Munda System

संदर्भ:

झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले में हो जनजाति के आदिवासियों ने पारंपरिक आत्म-शासन प्रणाली 'मानकी-मुंडा' में हस्तक्षेप के आरोप लगाते हुए उपायुक्त (DC) के खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन किया।

मांकी-मुंडा व्यवस्था:

पारंपरिक शासन व्यवस्था:

- मांकी-मुंडा प्रणाली झारखंड के कोल्हान क्षेत्र में हो जनजाति की पारंपरिक स्वशासन प्रणाली है।
- यह एक विकेन्द्रीकृत ढांचा है, जो सदियों से अस्तित्व में है और आज भी राज्य की औपचारिक प्रशासनिक प्रणाली के साथ समानांतर रूप से कार्य करता है।

संरचना:

- **मुंडा (ग्राम प्रधान):** वंशानुगत ग्राम प्रमुख, जो गाँव के **सामाजिक और राजनीतिक विवादों** का निपटारा करते हैं।
- **मांकी (मुखिया):** 8–15 गाँवों के समूह (*पीर*) का नेतृत्व करता है और वे मामले देखता है जिन्हें मुंडा सुलझा नहीं पाते।
- प्रारंभ में मांकी और मुंडा का भूमि या राजस्व संबंधी कार्यों से कोई सरोकार नहीं था।

ब्रिटिश हस्तक्षेप:

- **स्थायी बंदोबस्त अधिनियम (1793):** जमींदारों ने हो जनजाति की भूमि हड़पनी शुरू की, जिससे हो विद्रोह (1821–22) और कोल विद्रोह (1831–32) जैसे आंदोलन हुए।
- **विल्किंसन नियम (1833):**
  - ब्रिटिश अधिकारी कैप्टन थॉमस विल्किंसन ने मांकी-मुंडा व्यवस्था को 31 नियमों में संहिताबद्ध किया।
  - मांकी और मुंडा को सामुदायिक नेता तो माना गया, पर उन्हें औपनिवेशिक प्रशासन का एजेंट बना दिया गया।
  - इसके जरिए कोल्हान क्षेत्र ब्रिटिश भारत में शामिल हुआ, निजी संपत्ति, पट्टे और गैर-आदिवासी (दिक्कुओं) का प्रवेश शुरू हुआ।
  - हो लोगों को रैयत (किरायेदार) घोषित किया गया।

स्वतंत्रता के बाद:

- 1947 के बाद कोल्हान गवर्नमेंट एस्टेट समाप्त कर दिया गया, लेकिन विल्किंसन नियम को भारतीय न्यायालयों ने रिवाज (Custom) के रूप में मान्यता दी।
- 2021 में झारखंड सरकार ने पारंपरिक न्याय प्रणाली न्याय पंचायत को मान्यता दी, जिसे राजस्व कार्य, कर संग्रह, भूमि लेन-देन, कानून-व्यवस्था और विवाद निपटान जैसे कार्य भी सौंपे गए।

मांकी-मुंडा प्रणाली की समस्याएँ

1. **वंशानुगत उत्तराधिकार:**
   - मांकी और मुंडा के पद प्राय: पिता से पुत्र को मिलते हैं।
   - इससे योग्य व्यक्तियों को नेतृत्व के अवसर नहीं मिल पाते।
2. **औपचारिक शिक्षा का अभाव:** कई पारंपरिक नेता निरक्षर हैं और उन्हें भूमि अभिलेख, दस्तावेज़ प्रबंधन तथा आधुनिक प्रशासनिक कार्यों का प्रशिक्षण नहीं है।
3. **अनुपस्थित नेतृत्व:** कई बार मुंडा लंबे समय तक गाँव से बाहर रहते हैं, जिससे ग्रामीणों को बुनियादी सेवाओं तक पहुँच नहीं मिल पाती।
4. **गैर-आदिवासी समुदायों के साथ तनाव:** अनुसूचित जाति (SC) और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) जैसे गैर-आदिवासी समूहों ने **भेदभाव और आजीविका पर प्रतिबंध** की शिकायत की है।
5. **रिक्त पद:** पश्चिम सिंहभूम में लगभग 1,850 स्वीकृत पदों में से करीब 200 पद खाली हैं, जिससे जमीनी स्तर पर शासन प्रभावित होता है।
6. **नियमों की सीमित समझ:** अधिकांश नेता विल्किंसन नियम (1833) या 1837 के हुकूकनामा को पूरी तरह नहीं समझते, जिससे विवाद निपटान जटिल हो जाता है।
7. **राज्य अधिकारियों पर निर्भरता:** कई बार ग्रामीण सीधे उपायुक्त (Deputy Commissioner) से संपर्क करते हैं, जिससे मांकी-मुंडा प्रणाली की प्रभावशीलता और अधिकारिता कम हो जाती है।
8. **सुधार की मांग:** हो समुदाय का एक वर्ग, विशेषकर युवा पीढ़ी, मांकी-मुंडा प्रणाली में सुधार चाहता है।

राष्ट्रीय भू-तापीय ऊर्जा नीति 2025/ National Geothermal Energy Policy 2025

संदर्भ:

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) ने हाल ही में देश की पहली राष्ट्रीय भू-तापीय ऊर्जा नीति की शुरुआत की है। इस कदम के साथ भारत उन देशों की सूची में शामिल हो गया है जो धरती की सतह के भीतर मौजूद ऊष्मा का उपयोग कर 2070 तक नेट-ज़ीरो उत्सर्जन हासिल करने की दिशा में अग्रसर हैं।

राष्ट्रीय भू-तापीय ऊर्जा नीति:

1. दृष्टि एवं लक्ष्य (Vision & Goals):

- भू-तापीय ऊर्जा को भारत के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र का प्रमुख स्तंभ बनाना।
- ऊर्जा सुरक्षा को मज़बूत करना, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करना और सतत विकास को बढ़ावा देना।

2. क्रियान्वयन ढांचा (Implementation Framework – MNRE):

- अग्रणी भू-तापीय देशों के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग।
- पायलट प्रोजेक्ट्स को Renewable Energy Research & Technology Development Programme के अंतर्गत शामिल करना।
- IREDA और DFIs से रियायती ऋण।
- सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (CoEs) की स्थापना प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता हेतु।
- प्रगति रिपोर्ट द्वारा समय-समय पर निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित करना।

3. विकास मॉडल एवं परिनियोजन:

- मॉडल में शामिल चरण: सर्वेक्षण, ड्रिलिंग, व्यवहार्यता अध्ययन, निर्माण और संचालन।
- त्यक्त (abandoned) तेल एवं गैस कुओं को भू-तापीय परियोजनाओं में बदलना।
- **तेल, गैस और खनिज कंपनियों** के साथ संयुक्त उद्यम।

4. वित्तीय प्रोत्साहन (Fiscal Incentives):

- दीर्घकालिक रियायती ऋण और सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड्स।
- वायबिलिटी गैप फंडिंग (VGF)।
- आयात शुल्क और GST छूट, टैक्स हॉलिडे और तेजी से मूल्यह्रास (Accelerated Depreciation)।
- Renewable Purchase Obligations (RPOs) और कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग में शामिल करना।

5. निवेश समर्थन (Investment Support):

- **100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)** की अनुमति।
- रियायती ऋण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग।
- **पूर्वोत्तर और उच्च हिमालयी राज्यों** के लिए विशेष वित्तीय सहायता।

6. परियोजना अवधि (Project Duration):

- भू-तापीय परियोजनाओं को अधिकतम **30 वर्ष** तक समर्थन।
- संसाधन उपलब्धता के आधार पर विस्तार संभव।

7. राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए दिशा-निर्देश:

- **भू-तापीय ब्लॉकों का आवंटन** (3–5 वर्ष की खोज अनुमति के साथ)।
- **सिंगल विंडो क्लियरेंस** प्रणाली।
- रियायती दर पर भूमि पट्टा उपलब्ध कराना।
- **स्थानीय समुदाय की भागीदारी** और मुआवज़े के उपाय, विशेषकर आदिवासी व दूरदराज़ क्षेत्रों में।
- **दीर्घकालिक विकास प्रावधान** (30 वर्ष तक)।

भू-तापीय ऊर्जा (Geothermal Energy):

परिभाषा (Definition):

- भू-तापीय ऊर्जा पृथ्वी की सतह के नीचे संग्रहीत **ऊष्मा (Heat)** है।
- यह मुख्यत: **रेडियोधर्मी क्षय (Radioactive Decay)** और **मैग्मा की गति** से उत्पन्न होती है।
- इसे **गर्म जलाशयों (Hot Water Reservoirs)**, **प्राकृतिक भाप (Natural Steam)** या **गर्म चट्टानों (Hot Rock Formations)** के माध्यम से उपयोग किया जा सकता है।

उपयोग (Applications):

- बिजली उत्पादन
- हीटिंग और कूलिंग सिस्टम
- औद्योगिक प्रक्रियाएँ
- जल शुद्धिकरण (Water Purification)
- विशेषता: सौर और पवन ऊर्जा के विपरीत, भू-तापीय ऊर्जा निरंतर और बेस-लोड (Base-load) नवीकरणीय ऊर्जा प्रदान करती है।

सारनाथ / Sarnath

संदर्भ:

भारत ने 2025-26 चक्र के लिए सारनाथ को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल करने हेतु आधिकारिक रूप से नामांकित किया है।

सारनाथ (Sarnath) – परिचय

स्थान (Location):

- सारनाथ उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास स्थित है।
- यह चार प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है (अन्य: लुंबिनी, बोधगया, कुशीनगर)।

ऐतिहासिक महत्व (Historical Importance):

- गौतम बुद्ध ने बोधगया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद लगभग 528 ई.पू. में सारनाथ में पहला उपदेश दिया।
- इस घटना को *"धम्मचक्र प्रवर्तन"* या *"धर्म के चक्र को घुमाना"* कहा जाता है।
- यहीं से बौद्ध संघ (भिक्षुओं का समुदाय) की शुरुआत हुई।

मुख्य स्मारक व संरचनाएँ (Monuments & Structures):

- **धमेक स्तूप (Dhamek Stupa):** सम्राट अशोक द्वारा निर्मित, बुद्ध के प्रथम उपदेश की स्मृति में।
- **चौखंडी स्तूप (Chaukhandi Stupa):** यहाँ बुद्ध अपने प्रथम पाँच शिष्यों से मिले थे।
- **अशोक स्तंभ (Ashokan Pillar):** सम्राट अशोक द्वारा स्थापित; इसका सिंह शीर्ष (Lion Capital) अब भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है।
- **मठ व अवशेष (Monasteries & Remains):** प्राचीन विहारों, मंदिरों और मूर्तियों के खंडहर।

अशोक का योगदान (Ashoka's Contribution):

- सम्राट अशोक ने 3री शताब्दी ई.पू. में सारनाथ की यात्रा की।
- यहाँ स्तूप, मठ और धर्म प्रचार संबंधी अभिलेख स्थापित किए।
- सारनाथ से प्राप्त *अशोक स्तंभ का सिंह शीर्ष* भारत ने 1950 में राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया।

आयन क्रोमैटोग्राफी / Ion Chromatography

संदर्भ:

ऑस्ट्रेलिया की तस्मानिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक पोर्टेबल आयन क्रोमैटोग्राफ 'Aquamonitrix' विकसित किया है, जो पारंपरिक महंगे लैब उपकरणों जितने सटीक परिणाम प्रदान करने में सक्षम है।

आयन क्रोमैटोग्राफी (Ion Chromatography)

आयन क्रोमैटोग्राफी (IC) एक विश्लेषणात्मक तकनीक है जिसका उपयोग किसी सैंपल में मौजूद आवेशित कणों (ions) को अलग करने और उनकी मात्रा ज्ञात करने के लिए किया जाता है। यह तकनीक कॉलम के अंदर मौजूद *charged stationary phase* और सैंपल के आयनों के बीच होने वाली परस्पर क्रिया पर आधारित है।

कार्य करने का सिद्धांत:

1. **कॉलम (Column):** रेज़िन (resin) से भरा हुआ कॉलम होता है, जिसमें स्थिर आवेश (stationary charge) होता है।
2. **इल्यूएंट:** एक तरल वाहक (liquid carrier solution) कॉलम में लगातार प्रवाहित किया जाता है।
3. **सैंपल इंजेक्शन:** सैंपल को इल्यूएंट की धारा में डाला जाता है।
4. **विभाजन (Separation):**
   - सैंपल के आयन रेज़िन से उनकी चार्ज और आकर्षण (affinity) के आधार पर प्रतिक्रिया करते हैं।
   - विपरीत आवेश वाले आयन रेज़िन से आकर्षित होते हैं और समान आवेश वाले आयन प्रतिकर्षित होते हैं।
   - इस कारण अलग-अलग आयन कॉलम से अलग-अलग गति से गुजरते हैं, जिससे उनका विभाजन हो जाता है।
5. **डिटेक्शन (Detection):**
   - एक डिटेक्टर (आमतौर पर *conductivity meter*) आयनों के गुजरने पर इल्यूएंट की चालकता (conductivity) में बदलाव को मापता है।
6. **क्रोमैटोग्राम (Chromatogram):**
   - डिटेक्टर से प्राप्त डेटा एक *chromatogram* पर दिखाया जाता है।
   - इसमें विभिन्न आयनों के लिए अलग-अलग पीक दिखाई देती हैं, जो उनकी उपस्थिति और सांद्रता को दर्शाती हैं।

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
~~₹6000/-~~
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
BBK
Baaten Bazaar ki
COURSE FEE
₹4000/-
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
Baaten Bazar Ki
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Baaten Bazar Ki
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE
+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)
FREE
EMI AVAILABLE
BBK
Baaten Bazar ki
» Long-Term Investing Foundations
» Principles of Value Investing and Stock
» Portfolio Construction Mastery
» Sectoral Investing
» Stock Picking Framework
» Active Portfolio Management Techniques
» Mega Cap vs Mid Cap Strategy
SPECIAL BONUS
COURSE VALIDITY
1 YEAR